



# INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

## संगीत साधना

डॉ० रेखा कुमारी  
संगीत एवं नाट्यविभाग  
ल० ना० मि० विष्णुविद्यालय  
कामेष्वरनगर, दरभंगा।

संगीत एक ऐसी कला है। जिसमें मानव स्वर और लय के द्वारा अपने भावों को प्रकट अपने भावों को प्रकट करता है। तथा साधना का अर्थ है, मन को किसी विषय में एकनिष्ठ भाव से संयुक्त करना।

“ किसी साध्य वस्तु की प्राप्ति के लिए जो प्रयत्न किया जाता है उसे साधना कहते हैं। ” 1

सदियों से मानव सांसारिक जीवन से दूर शान्ति की तलाश में भटकता रहा है। समस्त बन्धनों से अपने को मुक्त कर मानव ने तरस्वी का जीवन अपनाया। इन्द्रियों तथा मन को वष में किया परन्तु मानव मन को शान्ति कब, कहाँ और कैसे मिली, यह कहना बड़ा कठिन है।

श्रीमद्भागवत गीता तथा अन्य उपनिषदों में शान्ति साधना का आधार इन्द्रिय वषीकरण, मन बुद्धि की निर्मलता और परब्रह्मा से तदात्कार होना बताया है। इसी आधार पर नाद ब्रह्मा के उपासक संगीत योगियों ने संगीत साधना का मार्ग प्रषस्त किया है। संगीत साधना में इन्द्रियों के समाहित होने, मन के ध्यानस्थ होने तथा परब्रह्मा के गुणगान में ब्रह्मा से तादात्म्य स्थापित होने की योग साधना कितनी सुलभ और सुन्दर है उसकी अनुभूति संगीत साधना द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

डॉ० सुभद्रा चौधरी के अनुसार “ भारतीय चिन्तन धारा की एक बड़ी मौलिक विशेषता यह रही है कि सभी विधाओं, कलाओं, शास्त्रों आदि का अंतिम लक्ष्य आत्मानुभूति माना गया ” 2

वास्तव में संगीत की साधना योग साधना के समान है नाद को ब्रह्मा का रूप माना गया है पं० औंकार नाथ ठाकुर के अनुसार “ योगियों और महर्षियों के उसे निर्गुण ब्रह्मा का रूप कहा है परात्पर ब्रह्मा की अनुभूति प्रणव की साधना अथवा नाद की अनुभूति से सिद्ध होती है । ”3

योग का अर्थ, जोड़ना किन्हीं दो वस्तुओं के मिलन को योग कहा जाता है। आत्मा एवं शरीर को एकीकृत करने वाली संयमन की क्रिया योग है, किन्तु योग की क्रिया अत्यन्त कठिन है सर्व सामान्यजन योग साधना नहीं कर सकते, कोई बिरला व्यक्ति ही योग साधना में सफल हो पाता है योगीजन अपार कष्ट उठाकर अनेक कठिन साधनाओं के उपरान्त अनाहत नाद की सिद्धि प्राप्त करते हैं। योग और संगीत साधना में अत्यन्त साम्य है। जहाँ योग की साधना में केवल साधक ही लाभान्वित होता है किन्तु संगीत साधक अपनी कला द्वारा प्राप्त सिद्धि से चमत्कृत रूप से समस्त श्रोताओं के मन को एकाग्र कर आनन्द प्रदान करता है। योगी की ही भाँति संगीतज्ञ को भी अपनी कला की प्रेरणा पाने के लिए हृदय की गहराई में डूबकर चिन्तन करना पड़ता है।

संगीत साधना अत्यन्त उच्चकोटि की साधना है जिसमें शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं का समन्वय तथा अनेक सूक्ष्म तत्त्व निहित है। जिनका ध्यान साधना काल में साधक को रखना पड़ता है। संगीत कला अशिक्षित कलाकारों के हाथों में पड़ जाने से इसके कतिपय सिद्धांतों, शास्त्रों का स्वरूप, बिगड़ गया। जिससे व्यवहार पक्ष और शास्त्र पक्ष में समन्वय नहीं हो पाया इसका कारण साधना की उचित पद्धति का ज्ञान न होना। बहुत समय तक संगीत कला को पंडितों एवं उस्तादों ने अपनी निजी जागीर समझकर इसके रहस्यों को सर्वधारण साधक तक नहीं पहुँचाने दिया केवल अपने परिवार के

सदस्यों एवं प्रिय षिष्यों को ही इसके रहस्यों को बताते रहे जिससे इस कला के विकास में बाधा पड़ी।

मुसलमानों के प्रवेश के बाद कुछ ग्रन्थ या तो नष्ट हो गये या उनका अनुवाद बड़े ही विचित्र ढंग से किया गया जिससे इस कला के रहस्य और बिगड़ने चले गये।

जैन कालीन संगीत साधना का वर्णन करते हुए उमेष जोषी कहते हैं “ संगीत साधना के लिए हमें अपने जीवन को बुराईयों से पृथक रखना पड़ेगा चरित्र की निर्बलता को अक्षुण्ण रखना होगा। तथा आत्मा में दिव्य प्रकाश को जीवन की सतह पर फैलाना होगा यानि सत्य से प्यार करना होगा जीव जन्तुओं की रक्षा करनी होगी, चोरी से दूर रहना होगा, धन – दौलत इकट्ठी नहीं करनी होगी, इन्द्रियों को वष में रखकर मन, वचन और कर्म से पवित्र रहना होगा इन पाँच सिद्धान्तों का पालन करते हुए आप संगीत साधना योग्य हो सकते हैं। साधना के लिए जीवन के ये पाँच सिद्धान्त परम आवश्यक हैं, ताकि आप उच्च चरित्र के द्वारा संगीत के अथाह तल तक पहुँच सकें और अपनी मनोवांछित वस्तु को प्राप्त कर सकें बस यही धर्म के भी सिद्धान्त है।<sup>4</sup>

उपर्युक्त उद्धरण में धर्म और संगीत साधना की पद्धति को एक ही मान लिया गया है जिससे संगीत साधना की उष्कृष्टता का प्रतिपादन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है संगीत कला को महत्व शासन स्वीकारे तथा इस कला की उन्नति के यथेष्ट सुविधा प्रदान करे यही मानवता के हित में होगा, संगीत साधक संगीत की अधिष्ठात्री देवी “ माँ सरस्वती” का ध्यान कर नियमित संगीत साधना करे, गुरुओं पर श्रद्धा, नियम संयम का पालन विभिन्न संगीत सिद्धान्तों का चिंतन मनन, विभिन्न ग्रन्थों का अध्ययन, सदभावपूर्ण व्यवहार रखकर ही इस कलामें सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। संगीत एक अत्यन्त श्रेष्ठ कला है उसे मात्र मनोरंजन की वस्तु मानना भूल है। आचार्य उत्तराम शुक्ल कहते हैं :-

“ योग साधना के सहित सुर साधन तप ज्ञान ।

पुरातत्व की कल्पना ता बिनु दूर महान ॥<sup>5</sup>

अर्थात् अनेक प्रकार के योगों की साधना के साथ –साथ जब तक स्वर साधन रूपी घोर तप न किया जायेगा तब तक संगीत विषयक पुरातत्व की कल्पना भी हजारों कोस दूर रहने लगेगी।

संगीत कला की अनुभूति में संगीत साधक तथा श्रोता दोनों को समाधि की अवस्था का अनुभव होता है।

आचार्य बृहस्पति के अनुसार मनीषियों ने कहाँ है कि “गीत (सार्थक वाक्य नहीं नियमानुसार स्वरों के प्रयोग मात्र) के द्वारा श्रोताओं के हृदय में स्थित उनके व्यक्तिगत राग द्वेष इत्यादि को समन करके उन्हें आनन्द मात्र की अनुभूति कराई जा सकती है। उस समय श्रोता के मन से स्थित रजोगुण एवं तमोगुण सर्वथा दब जाते हैं और अन्तःकरण में सत्त्व का उदय होता है।<sup>6</sup>

प्रस्तुत उद्धरण से संगीत द्वारा सद्गुणों के विकास और समाधि जैसी अवस्था प्राप्ति का संकेत प्राप्त होता है। इस प्रकार हमें देखते हैं कि संगीत साधना अत्यन्त उच्च कोटि की साधना है और संगीत साधना तथा योग साधना में अत्यन्त साम्य दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ सूची ग्रन्थ –

- 1-कल्याण साधना – गीता प्रेस गोरखपुर पृष्ठ – 9
- 2-डॉ० सुभद्रा चौधरी, संगीत संचयन, पृष्ठ – 46
- 3-पं० ओंकार नाथ ठाकुर, प्रणव भारती, पृष्ठ – 111
- 4-उमेष जोषी, भारतीय संगीत का इतिहास, पृष्ठ –5
- 5-आचार्य उत्तमराम शुक्ल, संगीत शास्त्र, पृष्ठ –211
- 6-आचार्य बृहस्पति, संगीत चिन्तामणि (भाग –1) पृष्ठ – 319